

P. 1, 4, 76. Vop. 15, 5. — 6) Gegenstand (der Geringachtung, des Streites u. s. w.); = वस्तु AK. 3, 4, 10, 96. H. an. (एकवस्तु?). MED. Veranlassung, Grund (vgl. आस्पद, स्थान): तदा पराभवपदं भविष्यसि ÇUK. in LA. 43, 9. परिभूति: परं पदम् PĀṆĀT. II, 105. के वा न स्युः परिभवपदं निष्फलारम्भयत्नाः MEGH. 55. संदेहपदेषु (= संदेहविषयेषु Schol.) वस्तुषु so v. a. dem Zweifel unterworfen, zweifelhaft ÇĀK. 21. पदान्यष्टादशैतानि व्यवहारस्थिताविकृ M. 8, 7. Jiéñ. 2, 5. Mṛśāñ. 140, 18. विवादपदनिर्णेतृ P. 1, 3, 23, Sch. भूमिर्मित्रं किरणं च विग्रहस्य पदत्रयम् PĀṆĀT. I, 257. संपदः पदमापदाम् Spr. 643. अविवेकः परमापदां पदम् HIT. IV, 97. किमिति जगतां विस्मयपदम् Spr. 851. ईक्षारमयोर्नृणां पदानि BHĀG. P. 7, 13, 20. वस्त्वैकैकमपीह वाञ्छितफलप्राप्तेः पदम् RATNĀV. 2, 21. = अषोडश P. 6, 2, 7. AK. 3, 4, 28, 218. TAİK. 3, 3, 207 (s. Corrig.). H. an. Wird vom Schol. zu P. durch व्याज्ञ ein vorgeschützter Grund, Vorwand erklärt; hierzu folgendes Beispiel ebend.: मूत्रपदेन, उच्चारपदेन (das vorangehende Wort bewahrt seinen Accent) प्रस्थितः, welches wohl auch einfach um sein Wasser abzuschlagen u. s. w. bedeuten könnte. — 7) Fächer VARĀH. BRH. S. 32, 48, 55. द्विपद, त्रिपद zwei, drei Fächer einnehmend 50. अष्टाष्टकपदं कृत्वा in 64 Fächer eintheilen 55. चतुष्पद, अर्धपद ebend. अष्टाष्टकपदं लेख्यै रम्यामालिखितामिव Feld eines Schachbrettes R. 1, 5, 12. Parcellen eines Landstücks Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6, 343, 1 v. u. 544, 1. fgg. ग्रामपदैः 7, 26, Çl. 10. — 8) Fuss (vgl. 2. पद, पाद) AK. 3, 4, 10, 96. H. 616 (m., nach den Scholl. auch n.). H. an. MED. यथा कृस्ती कृस्तिन्याः पदेन पदमुच्यते AV. 6, 70, 2. पदस्नातस्य पृथक्पादे-ष्वप्यान्विद्यति KAUC. 64. स्तेये च अषोड (auf der Stirn) कार्यम् M. 9, 237. VIVĀDAK. 44, 2. ऊनपदं BHĀG. P. 1, 16, 35. पदेन zu Fuss Journ. of the Am. Or. S. 7, 11, Çl. 40. पदसुखस्पर्श MEGH. 61. सन्तु पूरतोभपदाभिः — अङ्गनाभिः RAGH. 16, 56. ब्रह्मादिसेवितपदाम् — डूर्गाम् Verz. d. Oxf. H. 167, a, 6. अस्तिकं मातुः प्रस्खलद्भिः पदैर्यथौ VID. 155. KATHĀS. 42, 3. शिखरिषु पदं न्यस्य MEGH. 13. अषोड पदमर्पयन्ती RAGH. 9, 74. सर्वेषां बलिनां मूर्ध्नि मयदे निहितं पदम् MBH. 2, 1403. मानिनां बलिनां राज्ञां मध्ये वै दर्शिते पदे 1405. रामेण निहितं मेने पदे दशसु मूर्धसु RAGH. 12, 52. मा निधाः पदे पदव्यां सगरस्य संततेः 3, 50. अग्रगल्भपदन्यासे (doppelsinnig) Spr. 170. पदे हि सर्वत्र गुणैर्निधीयते so v. a. Eindruck machen RAGH. 3, 62. जनपदे न गदः पदमादधौ 9, 4. Sehr beliebt ist die Verbindung पदे करु den Fuss setzen auf, betreten: पदे कृत्वाष्मनि Jiéñ. 3, 13. HARIV. 4118. के वा न पदमपये ऽकार्यत मया PRAB. 8, 4. शान्ते करिष्यसि पदे पुनराश्रमे ऽस्मिन् ÇĀK. 95. मूर्ध्नि पदे करु den Fuss auf's Haupt setzen so v. a. bestegen, übertreffen: राज्ञां मूर्ध्नि पदे करु KATHĀS. 20, 190. पतित्रतानां सर्वासो यया मूर्ध्नि कृतं पदम् 39, 222. हृदये (चित्ते) पदे करु sich des Herzens, des Geistes ganz bemächtigen: निर्विषस्य पदे करोति हृदये तस्य स्वतन्त्रस्पृहा Spr. 528. RĪĠĀ-TAR. 6, 293. तावज्ज्ञानवतां चित्ते विवेकः कुरुते पदम् DBĪRTAS. 84, 10. पदे करु bedeutet auch sich mit Jmd (loc. oder acc. mit प्राप्ते) einlassen, sich zu schaffen machen mit: धर्मेणापि पदे शर्वे कारिते पार्वतीं प्रति KUMĀRAS. 6, 14. im Prākṛit: कामो दापिणं सकामो कोडु । ज्ञेण अमञ्चसंधे ज्ञेण सुष-क्षिअथा सक्री पदे कारिदा ÇĀK. 47, 6. fg. आकिदिविसेसे आश्ररो (आदरो): पदे कोरेदि MĀLAV. 6, 12. Daher पद = व्यवसिति, व्यवसाय AK. 3, 4, 10, 96. H. an. MED. — 9) m. Strahl (schliesst sich an die Bed. Fuss an) MED. — 10) Versglied, Versviertel MED. RV. 1, 164, 23. 45. AV. 9, 10, 19.

VS. 19, 25. एकादशान्तराणि पदानि AIT. BR. 1, 6. 10. 17. 3, 3. 11. 18. 6, 10. पदावग्रहम् 33. 35. ÇĀṆĀK. BR. 22, 1. 5. LĪTĀ. 1, 6, 1. 2, 7, 11. मन्दे मन्दे र-चयति पदम् (zugleich Stellung) BHARTṚ. 3, 18. ÇĀK. 63. MĀLAV. 77. MEGH. 84. 101. अग्रगल्भपदन्यासे (doppelsinnig) Spr. 170. — 11) Wort, = शब्द TAİK. 3, 3, 207. H. an. MED. = सुप्तिङुक्त, त्याग्यत्क, विभक्त्यत् P. 1, 4, 14. H. 242. H. an. अर्थः पदम् VS. PRĀT. 3, 1. अन्तरसमुदायः पदम् 8, 50. अन्तरं वा 51. वर्षाः पदे प्रयोगार्हानन्वितैकार्थबोधकाः SĀH. D. 9. ÇĀT. BR. 10, 2, 6, 13. 11, 5, 6, 9. अर्थर्चं वा पादे वा पदे वा वर्षां वा ÇĀṆĀK. BR. 26, 5. KATHOP. 2, 15. RV. PRĀT. 10, 2. 11, 8. 13, 7. VS. PRĀT. 1, 98. 146. 151. 166. 2, 1. जगुः कल्पदान्तरम् (गीतम्) R. 1, 9, 24. उदारवृत्तार्थपदैः (स्त्रोकशतैः) 2, 45. विचित्रार्थपदैः (आध्यायान्) 4, 28. स्पष्टान्तरपदा (बाणी) HARIV. 14098. लुप्तवर्षापदे ग्रस्तम् AK. 1, 1, 5, 20. RAGH. 8, 76. KUMĀRAS. 4, 9. ad ÇĀK. 69, 2. ÇĀṆĀK. zu BRH. ĀR. UP. S. 305. AMAR. 43. हरेर्नामपदै रूदाकृतैः BHĀG. P. 6, 2, 11. ब्रह्मसूत्रपदैः BHĀG. 13, 4. दिव्यं मन्त्रपदे मन्त्रत् HARIV. 9618. MBH. 13, 4576. H. 11. 71. पदवत् RV. PRĀT. 1, 15. Bei PĀṆINI (vgl. übrigens auch पदाठ) heisst vor gewissen Suffixen auch das Thema पद, weil es vor diesen dieselben euphonischen Veränderungen erfährt, denen ein fertiges Wort vor einem andern fertigen Worte unterworfen ist, P. 1, 4, 15. fgg. Nach TAİK. 3, 3, 207. H. an. und MED. ist पद auch = वाक्य Rede. — 12) abgekürzt für पदाठ RV. PRĀT. 4, 35. 11, 4. VS. PRĀT. 4, 17. 20. AV. PRĀT. in Ind. St. 4, 281. KĀRAṆAVĪJĪHA ebend. 3, 269, 6. Schol. zu VS. PRĀT. 1, 34. 118. 3, 129. (ऋवेदः) पदक्रमविभूषितः MBH. 13, 4107. 1, 2880. 2883. HARIV. 14060. 14074. पदवत् UPAL. 4, 12. — 13) die Periode einer arithmetischen Progression COLEBR. Alg. 51. 52. — 14) Quadratwurzel SĪRĀS. 1, 59. 3, 16. 31. 36. 37. 4, 12. 22. 5, 6; vgl. COLEBR. Alg. 363. — 15) Quadrant SĪRĀS. 2, 29. 30. 3, 41. 11, 7. 8. — 16) वसिष्ठस्य पदम् N. eines Sāman Ind. St. 3, 233. — 17) Schutz, = त्राण AK. 3, 4, 10, 96. H. an. MED. — Vgl. अ०, अन्न०, अन्नु०, आश्रम०, उत्तर०, एक०, काञ्ची०, कौञ्जपदा (पदी gehört zu 2. पद), गोष्पद, जन०, त्रि०, दुष्पद, हु०, द्वि०, नख०, निष्पद, पञ्च०, पूर्व०, प्राक्पद, प्रोष्ठ०, मध्यम०, यज्ञ० u. s. w.

पदक (von पद) 1) n. a) Schritt: इतः प्रभृति यातव्यं पदकं पदकं शनैः Schritt vor Schritt MBH. 13, 2789. — b) Stellung, Amt: व्याख्यातृपदके चक्रे स तस्मिन्सुरमन्दिरे RĪĠĀ-TAR. 5, 29. — 2) adj. proparox. mit dem Padapāṭha vertraut gaṇa क्रमादि zu P. 4, 2, 61. Vop. 7, 15. — 3) m. a) = निष्क ÇĀBĀDĀRTHAKALPAT. bei WILS. eine Art Hals schmuck (देवपद-चिह्नादिपुक्तत्वात्) ÇKDĀ. — b) N. pr. eines Mannes; pl. seine Nachkommen gaṇa यस्कादि zu P. 2, 4, 63. — 4) f. पदिका s. त्रि०, द्वि०.

पदकार (पद + 1. कार) m. der Verfasser des Padapāṭha P. 3, 2, 23. MABIDH. zu VS. 7, 10. 10, 28. Schol. zu VS. PRĀT. 3, 57. 3, 41.

पदकाल (पद + काल) m. nach WEBER = पदाठ Schol. zu VS. PRĀT. 1, 120. पदकृत् (पद + कृत्) m. = पदकार Ind. St. 3, 396.

पदक्रम (पद + क्रम) 1) m. eine Reihe von Schritten: चित्रपदक्रमम् in guten Schritte WILSON u. d. W. — 2) eine Reihe von Versvierteln: संस्कृतं मधुरं चैव समान्तरपदक्रमम् (काव्यम्) R. GORR. 1, 3, 58. — 3) eine eigenthümliche Lese- und Schreibweise des Veda (s. u. क्रम 8.) TS. PRĀT. 2, 12. gaṇa उक्थादि zu P. 4, 2, 60. पदक्रमस्तनपा Ind. St. 1, 470. — 4) m. pl. der Pada- und die verschiedenen Krama pāṭha: ऋचौ